CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज

(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

Mobile No-+91-9076651662 **Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com**

Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

2020-2021

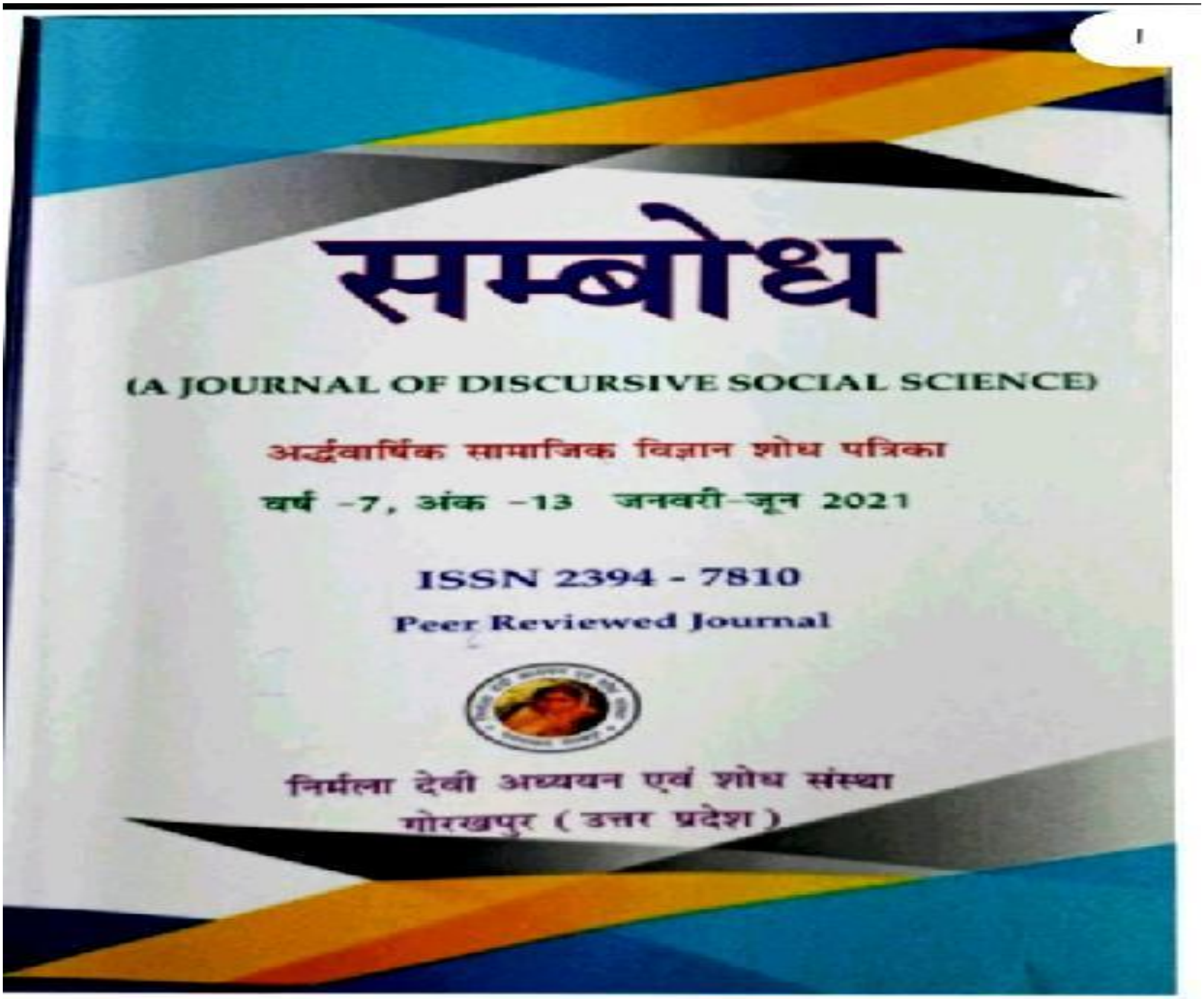

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला
पी० जी० कालेज,गोरखपुर

11

Models of Teaching

Pooja Gupta*

The classic definition of teaching is the design and creation of environments. Students learn by interacting with those environment and they study how to learn (Dewy, 1916). A model of teaching can be defined as the depiction of teaching and learning environment, including the behaviour of teachers and students while the lesson is presented through that model. Models of teaching enable the students to engage in robust cognitive and social task and teach the student how to use them productively. Models of teaching are the specific instructional plans which are designed according to the concerned learning theories. It provides a comprehensive blue print for curriculum to design instructional materials, planning lessons, teacher pupil roles, supporting aids and so forth. Joyce & Weil (2014) defines A model of teaching is a description of a learning environment, including our behavior as teachers when that model is used. Eggen (1979) defines that Models are prescriptive teaching strategies which help to realize specific instructional goals. Models of teaching are really models of learning. It helps students to acquire information, ideas, skills, value,

* Assistant Professor, Department of Home Science, CRD. PG College, Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur (U.P.)

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज, गोरखपुर

Mobile No-+91-9076651662 **Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com**

Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

International Journal of Home Science

ISSN Number: 2395-7476

Acceptance Letter

Ref. No.: **HS-7-1-10**
Date: **05-01-2021**

To,
Pooja Gupta

This letter confirms that manuscript titled **"A study on parents attitude towards positive effect of social media on their children"** has been accepted for publication in the International Journal of Home Science.

Yours Sincerely,

Akhil Gupta

Akhil Gupta
Publisher
International Journal of Home Science
Web: www.homesciencejournal.com

AKINIK Publications Director

self Attested
Pooja gupta
S.N = (19)

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज, गोरखपुर

नई शिक्षा नीति 2020 : सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में

डॉ० रेखा श्रीवास्तव
[illegible]

सारांश

[illegible] नई शिक्षा नीति 2020 [illegible] चिंतन एवं [illegible] है, इस नीति ने स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों ही क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर परिवर्तनकारी सुधार के [illegible] है। इस नीति का मूल उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्कूली एवं कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र, समावेशित, लचीला और कौशल आधारित बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत एवं वैश्विक महाशक्ति में बदलना तथा छात्र को वैश्विक नागरिक के रूप में रूपांतरित करना है, उच्च शिक्षा के संदर्भ में यदि नई शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं एवं संकल्पनाओं का [illegible] विश्लेषण करने का प्रयास [illegible] कि नई शिक्षा नीति 2020 ने उच्च शिक्षा में पाठ्यक्रम, [illegible] विषयों की [illegible] बहुविषयक [illegible] के साथ पाठ्यक्रम के बीच में नामांकन एवं निकास की अनुमति, एकल नियामक [illegible], एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट, [illegible] आधारित डिजिटल एजुकेशन के साथ [illegible] गुणवत्तापरक [illegible] संस्कृति आदि कई ऐसी संभावनाएं हैं जिससे उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित होगी एवं [illegible] चुनौतियों से निजात पाया जा सकता। प्रस्तुत शोध आलेख में कुछ इन्हीं मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है।

संकेत शब्द :- समग्र बहुविषयक शिक्षा, [illegible] क्रेडिट सिस्टम, सकल नामांकन अनुपात, एकल नियामक प्राधिकरण, स्वायत्तता, डिजिटल एजुकेशन, नई शिक्षा नीति में संबंधित चुनौतियां, सुझाव।

प्रस्तावना :-

[illegible]

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज, गोरखपुर

CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज

(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

Mobile No-+91-9076651662 **Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com**

Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला
पी० जी० कालेज,गोरखपुर

Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

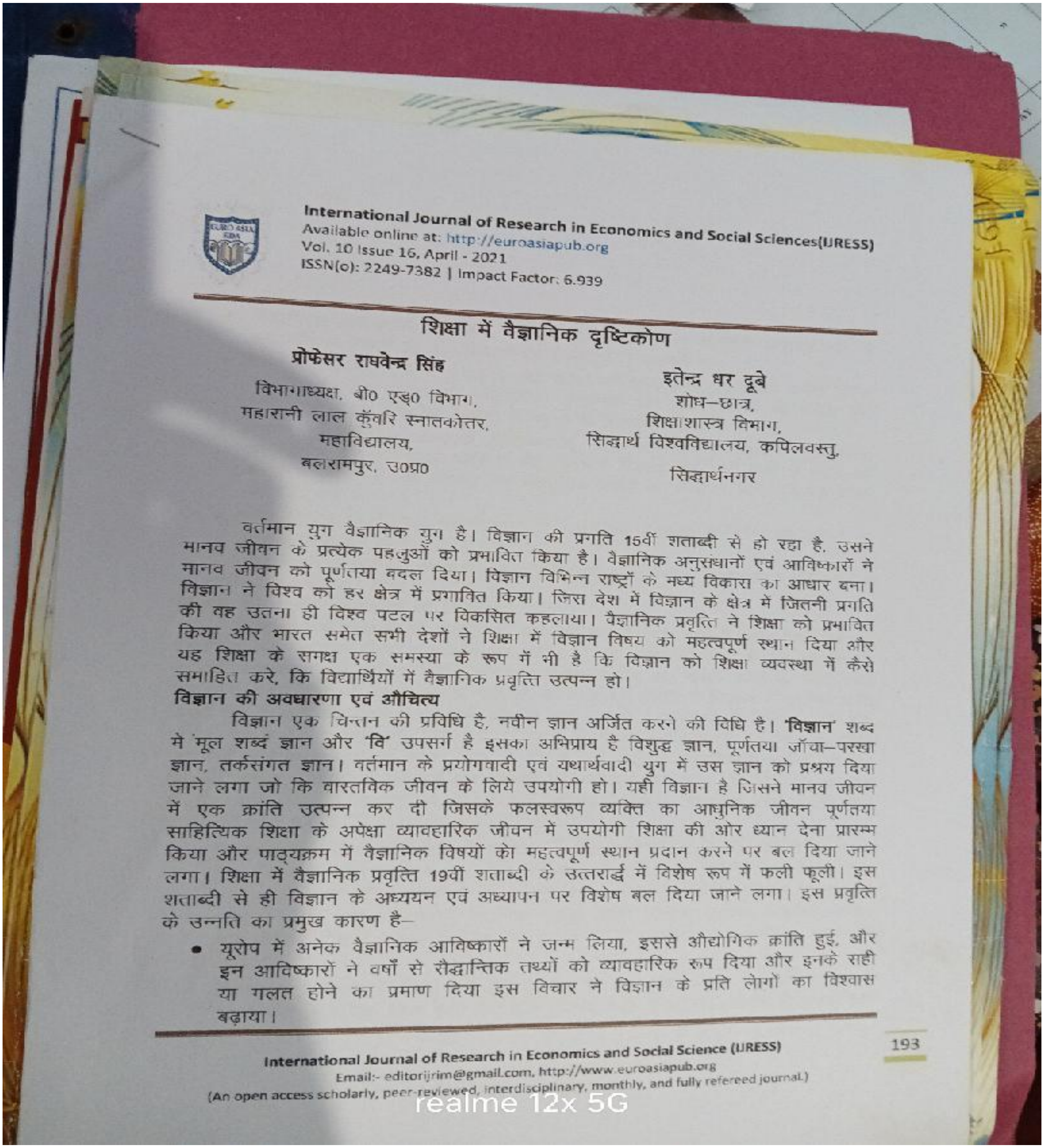

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 16, April - 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939

शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्रोफेसर राघवेन्द्र सिंह
विभागाध्यक्ष, बी0 एड0 विभाग,
महारानी लाल कुँवरि स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय,
बलरामपुर, उ0प्र0

इतेन्द्र धर दूबे
शोध–छात्र,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान की प्रगति 15वीं शताब्दी से हो रहा है, उसने मानव जीवन के प्रत्येक पहलुओं को प्रभावित किया है। वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं आविष्कारों ने मानव जीवन को पूर्णतया बदल दिया। विज्ञान विभिन्न राष्ट्रों के मध्य विकास का आधार बना। विज्ञान ने विश्व को हर क्षेत्र में प्रभावित किया। जिस देश में विज्ञान के क्षेत्र में जितनी प्रगति की वह उतना ही विश्व पटल पर विकसित कहलाया। वैज्ञानिक प्रवृत्ति ने शिक्षा को प्रभावित किया और भारत समेत सभी देशों ने शिक्षा में विज्ञान विषय को महत्वपूर्ण स्थान दिया और यह शिक्षा के समक्ष एक समस्या के रूप में भी है कि विज्ञान को शिक्षा व्यवस्था में कैसे समाहित करे, कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति उत्पन्न हो।

विज्ञान की अवधारणा एवं औचित्य

विज्ञान एक चिन्तन की प्रविधि है, नवीन ज्ञान अर्जित करने की विधि है। **'विज्ञान'** शब्द मे मूल शब्द ज्ञान और 'वि' उपसर्ग है इसका अभिप्राय है विशुद्ध ज्ञान, पूर्णतया जॉचा–परखा ज्ञान, तर्कसंगत ज्ञान। वर्तमान के प्रयोगवादी एवं यथार्थवादी युग में उस ज्ञान को प्रश्रय दिया जाने लगा जो कि वास्तविक जीवन के लिये उपयोगी हो। यही विज्ञान है जिसने मानव जीवन में एक क्रांति उत्पन्न कर दी जिसके फलस्वरूप व्यक्ति का आधुनिक जीवन पूर्णतया साहित्यिक शिक्षा के अपेक्षा व्यावहारिक जीवन में उपयोगी शिक्षा की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया और पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने पर बल दिया जाने लगा। शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विशेष रूप में फली फूली। इस शताब्दी से ही विज्ञान के अध्ययन एवं अध्यापन पर विशेष बल दिया जाने लगा। इस प्रवृत्ति के उन्नति का प्रमुख कारण है–

- यूरोप में अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों ने जन्म लिया, इससे औद्योगिक क्रांति हुई, और इन आविष्कारों ने वर्षों से सैद्धान्तिक तथ्यों को व्यावहारिक रूप दिया और इनके सही या गलत होने का प्रमाण दिया इस विचार ने विज्ञान के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ाया।

realme 12x 5G

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला
पी० जी० कालेज,गोरखपुर

International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 6, June 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु संचालित कार्यक्रम

डॉ0 इतेन्द्र धर दूबे
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी0जी0 कालेज गोरखपुर उ0प्र0

महिलाओं की स्थिति ही वह सपना है, जो समाज की दशा और दिशा को स्पष्ट कर देता है। महिला सशक्तिकरण की बात उठते ही यह चिन्तन आरम्भ होता है कि क्या वास्तव में महिलायें कमजोर है और इनके सशक्तिकरण की आवश्यकता है। प्रकृति ने तो महिलाओं को शारीरिक रूप से पुरुषों की तुलना मे ज्यादा प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करके सृष्टि को जन्म देने जैसा मजबूत कार्य सौंप रखा है। महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा, अधिकारों के प्रति उदासीनता, आर्थिक निर्भरता, तकनीकी अज्ञानता, स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता, सामाजिक कुरीतियाँ एवं पुरुषों का महिलाओं पर प्रभुत्व है।

महिला सशक्ति की आवश्यकता : प्राचीन भारतीय समाज से लेकर आज के आधुनिक कहे जाने वाले समाज तक स्त्रियाँ उपेक्षित ही रही हैं। आज भी ग्रामीण महिलाओं मे व्याप्त अशिक्षा, अधिकारों के प्रति उदासीनता, आर्थिक–निर्भरता, तकनीकी अज्ञानता, स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता, सामाजिक कुरीतियां एवं पुरुषों का महिलाओं पर प्रभुत्व आदि प्रमुख कारणो से महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है, जिसके लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम : महिला सशक्तिकरण हेतु आवश्यक है कि वह स्वयं उन नीतियों एवं योजनाओं के निर्माण में सहभागी हो जो उनके लिए बनायी जा रही है। भारत के संविधान में मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा का प्रत्यक्षण पग–पग पर होता है। मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं का संरक्षण एवं संवर्धन संविधान के भाग–3 में वर्णित मौलिक अधिकारों से पुष्ट होता है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 14, 15(1), 16(1), 19(1)(ग)(घ), 20(1), 21, 22, 23, 25(1)(ख), 29(1) तथा 32 एवं इसी तरह कुछ अन्य भारतीय जनों (महिला एवं पुरुष) को महत्वपूर्ण एवं सर्वोच्च मानवीय मूल्य संवर्धन के अधिकार प्रदान करते हैं, जिसने मानव अधिकारों के सार्वभौमिक घोषणा की अवधारणा का अनुकूलन तथा अनुशीलन सार्थकता को प्राप्त होता है।

भारत में महिलाओं से सम्बन्धित समस्याओं की देख–रेख के लिए राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन 31 जनवरी, 1992 को राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम, 1990 के अन्तर्गत किया गया। यह महिलाओं का शीर्षस्थ सविधिक निकाय है यहाँ महिलाओं की समस्या को सुना, समझा और संवैधानिक

realme 12x 5G

प्राचार्या
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज,गोरखपुर

CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किशोर विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा

डा० इतेन्द्र धर दूबे
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कालेजए गोरखपुर

हम सब एक–दूसरे से अलग होते हैं, अलग–अलग गुणों एवं विशेषताओं के साथ जन्म लेते हैं, हम जीवन के विभिन्न चरणों में विभिन्न प्रकार के गुण प्राप्त करने के मामले में भी भिन्न होते हैं। कुछ जन्मजात गुणो एवं कुछ अर्जित गुणों के साथ हम अपनी दक्षता बढ़ा सकते हैं, सफल व्यक्तियों के उदाहरण दर्शाते है कि उनकी सफलता मात्र उनके जन्मजात या वंशागत गुणों का परिणाम नहीं है। गुणों को प्राप्त करने में उन्होंने कठोर परिश्रम किया है, जन्मजात एवं अर्जित दोनों गुणों का अधिकतम उपयोग किया है और समय के साथ–साथ सफल हुए हैं। हमे अपनी दक्षता के विभिन्न पहलुओं में वृद्धि करने के लिए इन्हीं गुणों का निष्पादन करना आवश्यक है।

शिक्षा एक साधन है जिससे किसी देश की उन्नती हो सकती है। शिक्षा एक नये और उज्ज्वल समाज के विकास का आधार है। विद्या एक दीप है जिससे जीवन के समस्त अन्धकार को दूर करके बालक मे पवित्र संस्कारों, भावनाओं, नैतिक दृष्टिकोण और भावी विचारों को जन्म देता है। जिससे बालक का समस्त जीवन प्रकाशित होता है। जो देश के भावी नागरिक है। उनके व्यक्तित्व का संतुलन एवं उचित परिमार्जन करती है। इसके लिए शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के सर्वांगीण विकास अर्थात शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना है। शिक्षा मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति में तर्क के आधार पर सुलझाने का ज्ञान प्रदान करती है। विद्यालयों का वातावरण चाहे वो शैक्षिक हो या सह–शैक्षिक उसमें छात्रों की मानसिकता उनकी इच्छाओं सहज आकांक्षाओं को पूरा करते हुए यदि विद्यालय संचालन किया जाए तो छात्रों में एक नवीन उत्साह परिवर्तन दिखाई देता है। जो छात्रों के साथ विद्यालय को भी उचित वातावरण प्रदान करती है। अध्यापन कार्य एवं सह शैक्षणिक गतिविधियों का संतुलन उत्तम होना चाहिए। जिसमें छात्र स्वयं को चहुमुंखी विकास के क्षेत्र मे श्रेष्ठ अनुभव करें। महात्मा गांधी के अनुसार –

"शिक्षा से तात्पर्य है बच्चे में अंतर नीहित तन, मन एंव आत्मा का सर्वांगीण व सर्वोत्तम उन्नति से है।"

फ्रोबेल के शब्दों में –

"शिक्षा वह प्रक्रिया है जिससे बच्चे की आन्तरिक शक्तियां बाहर प्रकट होती हैं।"

इसलिए बालकों की विद्या की उचित व्यवस्था कर उसे संसाधन के रूप में विकसित करना प्रत्येक राष्ट्र का नैतिक कर्तव्य है। हर देश को पहचानने का कार्य उस देश की प्राकृतिक सम्पदा से नही बल्कि स्वस्थ, सुरक्षित, प्रभावशाली, कर्मठ एवं देशभक्त नागरिकों से होती है।

इन [illegible] के महत्त्व की ओर आकर्शित होकर तथा शैक्षिक कार्य को अनिवार्य रुप से सुलभ और [illegible] बनाने के लिए देश के महान सपूत गोपाल कृष्ण गोखले ने ब्रिटिश कालीन विधानसभा (इंपीरियल असेम्बली) में शिक्षा के अधिकार की बात कही थी। तब से लेकर आज तक इसे

realme 12x 5G

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज, गोरखपुर

CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences
Vol. 26, Issue 15, JUNE 2021 Impact Factor 6.13 ISSN: (4571-2232)
www.skirc.org Email id: skirc.org@gmail.com

पारिवारिक द्वन्द के कारण

डा0 इतेन्द धर दूबे
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कालेजए गोरखपुर

मानव शास्त्रियों ने प्रकार्य एवं आकार्य के अवधारणात्मक आधार पर कारणता की खोज की है। यार्क ने संघर्ष को मूल अवधारणा मानकर कारणता की खोज की है। सोरोकिन ने तार्किक बोध के आधार पर कारणता की खोज की है। हमने प्रस्तुत शोध में पारिवारिक द्वन्द्वों के कारण की खोज की है। यद्यपि यह सामाजिक मांगों का सन्दर्भ है, परन्तु कारण की खोज को हमने केवल पारिवारिक सम्बन्धो तक सीमित रखा है। हमारी व्याख्या के प्रकाश में परिवार से सम्बन्धित सामाजिक मांगे पूरी नहीं हो पायी या उनकी पूर्ति मे बाधा हो, वह पारिवारिक द्वन्द्व का कारण है। इसके विपरीत जो सामाजिक मांगों को पूरा करे या पूर्ति मे सहायक हो, वह पारिवारिक द्वन्द्वों के कारणों की व्याख्या प्रस्तुत करेंगे।[1] वे व्यवहार या प्रत्याशाए जिसमें परिवार संस्थायीकृत मूल संयुक्त संशयों की आपूर्ति होती है जो द्वन्द्व का कारण है और ऐसे ही व्यवहार पारिवारिक द्वन्द्व भी है। द्वन्द्व इतना व्यापक है कि इसके अन्तर्गत तनाव, मनमुटाव, आक्रमण्यता, विघटन, आदि सम्प्रत्य सम्मिलित है। द्वन्द्व के अंतर्गत हम वाक–युद्ध, झगड़े, चुंगलीपन आवश्यकताओं की आपूर्ति से उत्पन्न असंतोष और शारीरिक आघात आदि जिससे परिवार संस्थात्मीकृत प्रत्याशाओं में अन्तर आता हो, को ले सकते है। जैम्स स्टेमेना ब्राउन ने जिन्हें तनाव कहा है उन्हें हम पारिवारिक द्वन्द्व के अन्तर्गत रखते है। ब्राउन ने निम्नलिखित तनाव (द्वन्द्व) के कारण बताये है –

1. वंश सम्बन्धों के विकास के साथ एवं स्वतंत्र पारिवरों की स्थापना के साथ झगडे स्वाभाविक रूप से उत्पस्थित हो जाते हैं।
2. बहुत द्वन्द्व पति या पत्नी के वंश सम्बन्धियों को लेकर होते है। विवाह के पश्चात नये वंश सम्बन्धो का द्वन्द्व होता है।
3. प्रायः विरोध का कारण पति–पत्नी का वर्ग स्थिति होती है।[2]

आधुनिक भारतीय समाज मे अनेकों युवक व युवतियों को दोस्ती प्यार में बदल रहा है और वे अपने प्रेम विवाह को अपने परिवार वालो की सहायता से बहुत हद तक अरेंज्ड मैरिज में बदलने मे कामयाब हो रहे है। उनका मानना है कि क्यों न ऐसे इंसान से शादी की जाये जिससे हम पूर्व परिचित हों। मनोविश्लेषक इस चलन को समाज के लिए बेहद नामकारी बता रहे है। उनका मानना है कि एक दूसरे के सवभाव से भिझ व्यक्ति यदि हमसफर बनने का निर्णय लेते है तो यह एक सुलझे हुए और परिपक्व गृहस्थ जीवन की शुरूआत होगी। दो व्यक्तियों में वैचारिक समानता इस रिश्ते का सबसे बड़ा सकारात्मक पहलू है। वह मेरे सारे सीकेट्स जानता है।[3] मैं उससे कैसे शादी कर सकती हूँ। इस सुलझे हुए सम्बन्ध मे यही एक छोटी सी मुश्किल है। पति/पत्नी यदि एक दूसरे की सभी गोपनीय बातों से परिचित हो तो विवाह बाद यदाकदा यही बातें सुखी गृहस्थ जीवन मे द्वन्द्व का कारण बन सकती है। जब पत्नी पति से ज्यादा कमाएं तो कुछ तो प्रतिक्रिया होगी ही। कुछ दम्पत्ति इस मुदे को विवाद का विषय बनाते है तो कुछ उस सच्चाई को समाज से छिपाते है, लेकिन कुछ जोड़े ऐसे भी है जो सामाजिक दृष्टकोण को दर किनार कर आपसी तालमेल से इस मुदे को मामूली से विषय भर में बदल देते है।[4]

realme 12x 5G

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज,गोरखपुर

CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संयुक्त एवं एकांकी परिवार का महत्त्व

डा0 इतेन्द्र धर दूबे
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी
कालेज, गोरखपुर

संयुक्त परिवार भारतीय समाज व्यवस्था की प्राचीन संस्था है। यद्यपि विभिन्न कारणों से संयुक्त परिवारों का रूपान्तरण हो रहा है और उनका स्थान एकाकी परिवार ले रहे हैं, किन्तु आज भी भारतीय मनोवृत्ति संयुक्त परिवार के पक्ष में है। सच तो यह है कि एकाकी परिवारों की बढती प्रवृत्ति के बावजूद संयुक्त परिवारों की महत्ता कम नहीं हुई है। संयुक्त परिवार शिशु पालन की सर्वश्रेष्ठ इकाई है। अन्य प्राणियों की तुलना में मानव का शैशवकाल अधिक लंबा होता है। अतः उसका सर्वांगीण विकास तभी संभव है, जब कि वह संयुक्त परिवार में रहे। यहां न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण ही होता है, बल्कि प्रेम, दया, सहानुभूति और अनुशासन जैसे गुणों का विकास भी होता है। यहां उसे त्याग, बलिदान, आज्ञापालन और कर्तव्यपरायणता का पाठ प्रमुखता से पढ़ाया जाता है। संयुक्त परिवार व्यक्ति को सामाजिक प्राणी बनाता है तथा उसे अपने परिवार और समाज के रीति–रिवाज, संस्कृति और प्रथाओं से अवगत कराता है। यदि कामकाजी दंपत्ति संयुक्त परिवार में रहते हैं तो परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की देख–रेख में बच्चा पलता है और उसका चरित्र भी ऊंचा होता है। संयुक्त परिवार की लड़की लाना आज भी अच्छा माना जाता है। क्योंकि उसमें अच्छे संस्कार पड़ते हैं। यही वजह है कि संयुक्त परिवार की लड़कियां हर जगह सामंजस्य स्थापित कर लेती हैं। प्रसूति के दौरान शिशु और मां की देखभाल संयुक्त परिवार में ही अच्छी तरह से हो सकती है। संयुक्त परिवार में जो संरक्षण और सुरक्षा मिलती है वह अन्यत्र उपलब्ध होना कठिन है। वृद्धावस्था, बीमारी, दुर्घटना, असहाय अवस्था, अपाहिज होने पर संयुक्त परिवार ही सहारा होता है। विपत्ति के समय संयुक्त परिवार अपने सदस्यों को संरक्षण एवं सुरक्षा प्रदान करता है। किसी एक सदस्य पर आई विपत्ति का सामना सब मिल कर करते हैं। किसी सदस्य की नौकरी छूट जाती है तो उसकी दूसरी नौकरी लगने तथा संयुक्त परिवार उसे संरक्षण देता है। विधवा को संयुक्त परिवार संरक्षण प्रदान करता है तथा उसके बच्चो की उचित परवरिश भी करता है। संयुक्त परिवार अपने उन सदस्यों को भी सहारा प्रदान करता है, जिनकी आय कम है और जो इस आय में अपना भरण–पोषण करने में असमर्थ हैं।[1] आर्थिक दृष्टि से भी संयुक्त परिवार काफी लाभप्रद है, क्योंकि एक ही जगह भोजन बनाने से खर्च कम आता है। फिजूल खर्ची पर परिवार का मुखिया नियंत्रण रखता है, अतः धन की बर्बादी नहीं हो पाती। व्यवसाय का संचालन भी कुशलतापूर्वक किया जा सकता है। परिवार के नए सदस्यों को सिरे से पांव नहीं जमाने पड़ते बल्कि उन्हें ठोस आधार विरासत मे मिलता है। परिवार को संयुक्त रख कर भूमि को टुकड़ों में [illegible] बचाया जा सकता है। संयुक्त परिवार से अच्छा कोई औरमनोरंजक स्थल नहीं है। देवर भाभी की हंसी–मजाक, ननद भौजाई की नोंक–झोंक, बच्चों की किलकारियां, परिवार में मनोरंजन का वातावरण [illegible] करती है। संयुक्त परिवार में बुजुर्गों के पास अनुभव और ज्ञान का भंडार होता है तथा कई बार [illegible] परिस्थितियां बुजुर्गों के विवेक और मार्गदर्शन से आसान बन जाती है। संयुक्त परिवार अपने आप में सुरक्षा कवच है। संयुक्त परिवार में कठिन से कठिन कार्य भी सुगमता से किया जा सकता है।[2]

संयुक्त परिवार में कार्य का विकेन्द्रिकरण हो जाता है। संयुक्त परिवार मे सुख्या [illegible] बांटने से बढ़ता है और दुःख कम हो जाता है। संयुक्त परिवार में कई छोटे–छोटे परिवार होते हैं और इसके सदस्य एक ही निवास स्थान पर रहते हैं जिसे वे 'बड़ा घर' कहते हैं। प्रत्येक छोटे परिवार के लिए एक या दो

realme 12x 5G

प्राचार्य
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज,गोरखपुर

A.K.D. Journal of Educational Studies
Vol. 9 (3) & 10 (4) Aug. [illegible]
ISSN 2250-2327, UGC Approval No. 41334

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में गुणात्मक उन्नयन हेतु व्यवहारिक तथ्यों का मूल्यांकन एवं सुझाव

रेखा श्रीवास्तव* एवं [illegible] कुमार [illegible]**

जीवन यदि ईश्वर का उपहार है तो शिक्षा इस धरा की अमूल्य निधि, जो शिक्षक के माध्यम से प्राप्त होती है, इसीलिए शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना जाता है। वस्तुतः शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यवस्तु में से शिक्षक का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की धुरी शिक्षक होता है। शिक्षक के निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी समाज ज्ञानार्जन की सही दिशा का अनुसरण नहीं कर सकता।

इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री नेल्सन एल0 बासिंग का कहना है कि "शिक्षा की किसी भी योजना में है अध्यापक के केन्द्रीय स्थान का महत्त्व है। विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र की सम्पत्ति और उसके भावी कर्णधार होते हैं। इनके मध्य अध्यापक की भूमिका बगीचे के माली के समान है, जो विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक विकास के उत्तरदायित्व का निर्वहन करता है। किन्तु उक्त उत्तरदायित्व का निर्वहन शिक्षक तभी कर सकता है जबकि वह विषय का ज्ञाता होने के साथ–साथ शिक्षण नियोजन, संगठन, अभिकल्पन, सम्प्रेषण एवं मूल्यांकन जैसे शिक्षणीय व्यवहारों में भी दक्ष एवं निष्णात हो। यह निपुणता उसे शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त होती है।

यह निर्विवाद है कि शिक्षा का स्तर बहुत कुछ शिक्षक की योग्यता, कार्यक्षमता व कुशलता पर निर्भर होता है तथा शिक्षक की कार्यकुशलता काफी सीमा तक उसके अच्छे प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। अतः शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षकों का समुचित रूप से प्रशिक्षण हो। यह प्रशिक्षण कई स्तरों पर संचालित होता है जैसे– प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर। इन सभी स्तर पर योग्य एवं कुशल शिक्षकों की प्रतिपूर्ति एवं अध्यापक शिक्षा प्रणाली के मानक निर्धारण एवं गुणवत्ता संवर्द्धन के ध्येय से राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद अधिनियम 1993 के अन्तर्गत 17 अगस्त 1995 में 'राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद' (NCTE) एक संवैधानिक संस्था के रूप में अस्तित्व में आई। जिसके प्रमुख कार्य हैं–भारतीय शिक्षा प्रणाली के मानकों, प्रक्रियाओं एवं धाराओं की स्थापना करना, विनियमन करना तथा उन्हें समुचित रूप से बनाये रखना, अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित सर्वेक्षण तथा अध्ययन करना, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्रवेश, चयन, अवधि, पाठ्यक्रम व परीक्षा, शिक्षण शुल्क आदि के सम्बन्ध में दिशा निर्देश तैयार करना तथा प्रशिक्षण संस्थाओं को मान्यता प्रदान करना। साथ ही अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान तथा नवाचार को प्रोत्साहित करना।

अपने उपर्युक्त दायित्वों के निर्वहन के परिप्रेक्ष्य में NCTE ने शिक्षक प्रशिक्षक संस्थाओं के लिए अनिवार्य कर दिया है कि वे परिषद से मान्यता प्राप्त करें। परिषद मान्यता प्रदान करते समय संस्था के आर्थिक संसाधनों, पुस्तकालय प्रयोगशालाएँ आदि के साथ–साथ पाठ्यक्रम के समुचित संचालन के लिए

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर–[illegible] शिक्षा, चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी0जी0 कालेज, गोरखपुर
**[illegible] विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

प्राचार्या
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी0 जी0 कालेज, गोरखपुर